STD. x	FIRST TERM EVALUATION	AUGUST	2023-24

Answer Key - HINDI

1. बहुत अच्छी लडकी है ।

2. मैं + को = मुझे

3. साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।

4. **सहेली के नाम बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का ज़िक्र करते हुए**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेजती हूँ ।

आज स्कूल में एक घटना हुई । तीसरी पिरीयड गणित का था । गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे । आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे । तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया । लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी । उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं डर से काँप रही थी । उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी । फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया । तुम जानती हो, वे कितने क्रूर हैं । उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है । वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या ?

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

अथवा

साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ - क्या हुआ बेटा, बहुत परेशान दिखते हो ?
साहिल - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई ।
माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?
साहिल - नहीं । गणित के माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया ।
माँ - सुरेंदर जी ! उसने जरूर कोई गलती की होगी ।
साहिल - नहीं माँ । उसने कॉपी में जो लिखा था वह ठीक ही था ।
माँ - छोड दो । मास्टर जी है न ?
साहिल - पर माँ इस कारण वह मुझसे नज़र नहीं मिला पाई ।
माँ - बेचारी बहुत डर गई होगी । तुमने उसकी सांत्वना नहीं की ।
साहिल - ज़रूर माँ ।
माँ - बहुत अच्छा किया तुमने । उसे कुछ राहत मिली होगी ।

5. सामना करना

6. अकेली

7. **सही मिलान**

टूटा पहिया	उपेक्षित मानव
अभिमन्यु	अधर्म का विरोधी
चक्रव्यूह	समस्याएँ
महारथी	शासक वर्ग

8. **कवितांश का आशय** (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि धर्मवीर भारती की बहुचर्चित प्रतीकात्मक कविता ' टूटा पहिया ' से ली गई हैं । इसमें कवि महाभारत के वीर अभिमन्यु की कथा के माध्यम से वर्तमान समय की वास्तविकता का विश्लेषण करते हैं ।

कवि कहते हैं कि बडे बडे महारथी जानते हैं कि अपना पक्ष असत्य का है । फिर भी वे अपने ब्रह्मास्त्रों से अकेली निहत्थी आवाज़, अभिमन्यु को कुचल देने केलिए, मार डालने केलिए तैयार हो गए । उस वक्त अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे हुए पहिए को हथियार बनाकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था । जब सारा संसार किसी साहसी मनुष्य का आवाज़ को दबाने का प्रयास करेगा तब मैं रथ का टूटा हुआ पहिया उसके हाथ में रहकर शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का सामना कर सकता हूँ । यहाँ महारथी शोषक (शासक) वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है ।

आज के इस दौर में यह कविता बिलकुल प्रासंगिक है । आत्मकथात्मक शैली में लिखी हुई इस कविता की भाषा बहुत सरल है और जल्दी समझ में आनेवाली पंक्तियाँ हैं । इसमें कवि ने महाभारत कथा से कई प्रतीकों का प्रयोग किया है । इसमें कवि का आशावादी दृष्टिकोण प्रकट है ।

9. विनोद कुमार शुक्ल की

10. मैं जानता हूँ ।

11. व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से जानना ही जानने की असली आधार है ।

12. **पोस्टर**

जी एच एस एस, कोल्लम
हिंदी क्लब के नेतृत्व में
विश्व मानवता दिवस अवसर में

संगोष्ठी
विषय - **' मानवता ही मानव की पहचान है '**

तारीख - 2023 अगस्त 19
समय - सुबह 10 बजे
स्थान - स्कूल सभा भवन

उद्घाटन - शिक्षा मंत्री, केरल
विषय प्रस्तुति - हिंदी अध्यापक

* मनुष्यों के बीच मानवता बढाएँ ... पशुता नहीं ।
* जाति, रंग, धर्म के परे मनुष्य को मनुष्य की तरह पहचानें ।

भाग लें ... लाभ उठाएँ ...
सबका स्वागत

अथवा

टिप्पणी - मानवता का महत्व

हरेक व्यक्ति के जीवन में मानवता का अत्यधिक महत्व है । हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए प्रवृत्ति के आधार पर बनता है । अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं । मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं, इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा । हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है , वही सच्चा मानव है । दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए । हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए । दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं । ऐसे लोग अमर बन जाते हैं । हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार –भरे जीवन बिता सकेंगे । संक्षेप में हम सभी को मानवता को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए ।

13. बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने के लिए दुकान गए ।

14. साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान जा रहा था । उसने सोचा दुकान स्याही होगी । इसलिए उसने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा उसमें बची हुई स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया ।

SREEJITH K KOOVOOR, VARKALA, SCRIPS

15. पटकथा - (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।

समय - सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला और साहिल, करीब 11 साल के बच्चे, स्कूल यूनीफॉर्म पहने हैं ।

2. दुकानदार, करीब 50 साल का आदमी, धोती और कुर्ता पहना है ।

दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

संवाद -

दुकानदार - आओ बच्चे, क्या चाहिए ?

बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो ।

दुकानदार - बेटा, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।

साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?

दुकानदार - क्या पैन में थोडी भी स्याही नहीं है ?

बेला - नहीं भैया । पैन में थोडी स्याही थी । इसने तो उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।

दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बेटा, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।

साहिल - हाँ, गलती हुई ।

दुकानदार - कौन-सी कक्षा में पढते हो ?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।

दुकानदार - दोनों ?

बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं, ए । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।

दुकानदार - अच्छा । तो कल आओ, स्याही ज़रूर मिलेगी ।

बेला - ठीक है भैया ।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

अथवा

टिप्पणी – दोस्ती का महत्व

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है । दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है । एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है । दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए । क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती । असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं । सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है । सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता । वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं । सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती । सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है । समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है ।

16. खाने की अदला-बदली का

17. वाक्य पिरामिड

मोरपाल लाता था।

मोरपाल छाछ लाता था।

मोरपाल **रोज़** छाछ लाता था ।

मोरपाल **घर से** रोज़ छाछ लाता था ।

18. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : ....

आज मैं बहुत खुश हूँ ... पहली बार आज मैंने राजमा-चावल खाया । वह भी मेरे दोस्त की वजह से ... कितना स्वादिष्ट था ... अब भी मुँह से पानी आ रहा है । हे भगवान, इतना अच्छा भोजन जीवन में पहली बार खा रहा हूँ । इतने बडे घर का लडका ... कहता है - मेरा छाछ उसकी कमज़ोरी है ! खाने की अदला-बदली कितनी मज़ेदार है ! मिहिर, तू मेरा कितना अच्छा दोस्त है ! हमारी दोस्ती कभी न मिट जाएँ ... यही मेरी प्रार्थना है ।

SREEJITH.R, KONOOR, VARKALA, SCRIPS